ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 12 कुल पृष्ठ-8 13 से 19 दिसम्बर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.कृ.-15

हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द उत्साह एवं जोश के वातावरण में हुआ सम्पन्न

पूरे देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये

– स्वामी आर्यवेश

शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए युवक आगे आयें

– स्वामी ओमवेश

सभी ग्राम पंचायतें शराबबन्दी के लिए प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें

– स्वामी रामवेश

आर्य समाज संगठित होकर सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध संघर्ष करे

– स्वामी नित्यानन्द

26वाँ हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 9 दिसम्बर, 2018 को महर्षि दयानन्द पार्क, अर्बन स्टेट जीन्द में बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। हरियाणा के कोने–कोने से हजारों आर्यजन सम्मेलन में सम्मिलित हुए। नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी के संयोजन में तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित उक्त महासम्मेलन में सर्वश्री स्वामी ओमवेश जी पूर्व गन्ना मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार, स्वामी विजयवेश जी व्यायामाचार्य सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी नित्यानन्द जी उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट हाईकोर्ट चण्डीगढ़, रिटायर्ड कमाण्डेंट श्री सुखवीर सिंह सिन्धु, चौ. देवव्रत ढांडा, स्वामी रामेश्वरानन्द घोघड़िया, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, श्री कुलदीप आर्य, पं. रामेश्वर आर्य, श्री हवा सिंह तूफान, श्री जयपाल मलिक पूर्व निदेशक नेहरू युवा केन्द्र, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री जय भगवान शास्त्री, श्री सहदेव समर्पित सम्पादक 'शांतिधर्मी', कु. प्राची एवं कु. नीतू आर्या आदि ने अपने विचार रखे।

युवक सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के माध्यम से वक्ताओं ने अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह को उत्साहित कर जोश से भर दिया। स्वामी ओमवेश जी ने शहीदों के संस्मरण सुनाते हुए युवकों का आह्वान किया कि वे देश पर बलिदान होने वाले वीर शहीदों से प्रेरणा लेकर देश सेवा के लिए जीवन लगाने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि आज भी हमारे देश में अनेक ज्वलन्त समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं, उनके समाधान के लिए आवश्यकता है देशभक्त चरित्रवान नवयुवकों की। इसके लिए आर्य समाज नये सिरे से युवकों को संगठित करने का का अभियान चलायेगा। स्वामी विजयवेश जी ने युवा निर्माण के लिए पुनः युवकों के संगठन पर जोर दिया और कहा कि अब समय आ गया है कि हम सभी को युवा संगठन बनाने के लिए जुट जाना चाहिए। इस अवसर पर स्वामी नित्यानन्द जी ने हरियाणा की बिगड़ती समाज व्यवस्था पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि समाज में धार्मिक अन्धविश्वास शोषण एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आन्दोलन तेज करना चाहिए। इससे वे लोग आर्य समाज के साथ जुड़ेंगे जो अत्याचार से पीड़ित हैं। आर्य समाज एक वैचारिक क्रांति का नाम है, यह कोई अलग धर्म नहीं है बल्कि एक आन्दोलन है।

श्री रणधीर सिंह रेढू ने अपने बच्चों को संस्कार देने के लिए सुझाव दिये। उन्होंने कहा कि संस्कारों की कमी के कारण ही वर्तमान में बुर्जुगों को उनके बच्चे घर से बाहर निकालने तक का दुस्साहस करते हैं जो अत्यन्त चिन्ता की बात है। उन्होंने कहा कि संस्कार देने का कार्य आर्य समाज से ज्यादा और कोई संस्था नहीं कर सकती। अतः सभी को आर्य समाज से जुड़ जाना चाहिए।

बहन प्रवेश आर्या ने बेटियों को सुरक्षा, सम्मान एवं उचित अवसर देने का आह्वान किया। बहन पूनम आर्या ने महिलाओं के हो रहे अपमान एवं उनकी गिरती हुई गरिमा के प्रति अत्यन्त आक्रोश पूर्ण शब्दों में चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज महिलाओं के

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

फलित ज्योतिष से होता मानवता का वैचारिक शोषण

– पं. उम्मेदसिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे महान समाजिक सुधारक आर्ष और अनार्ष मान्यताओं का रहस्य बताने वाले युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सम्मुलास के प्रश्नोत्तर में लिखते है।

प्र0. :– तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है ?

उ0:– नही, जो उसमे अंक, बीज, रेखागणित विद्या है, वह सब सच्ची, जो फल की लीला है, वह सब झूठी है।

फलित ज्योतिष के द्वारा अवैदिक व सृष्टि क्रम विज्ञान के अमान्य अनार्ष मान्यताओं को चतुर लोगो द्वारा भारत की जनता का वैचारिक शोषण करके अपना मनोरथ तो पूर्ण किया ही है, अपितु भारत वर्ष को गुलामी के दलदल में धकेलने का भी कार्य किया है। बडे अफसोस के साथ लिखना पड रहा है कि यह पाखण्ड इस वैज्ञानिक युग में भी दिनो–दिन बढ़ता जा रहा है। स्वार्थी और चतुर किन्तु ज्ञान विज्ञान से शून्य लोग भोली–भाली जनता को फलित ज्योतिष की आड़ में कई प्रकार से लूट रहे है।

फलित ज्योतिष का पाखण्ड

कृतं मेदक्षिणेहस्ते जयोमेसव्य आहितः (अथर्व0)

ईश्वरीय व्यवस्था में मानव कर्म करने के लिये स्वतन्त्र है, और क्रमानसार फल प्राप्ति ईश्वरीय व्यवस्था मे होती है। मानव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल उसको ईश्वर द्वारा दिया जाता है। अतः मनुष्यो को अपने दिल में भरोसा रखना चाहिए कि यदि पुरूषार्थ मेरे दायें हाथ मे है तो सफलता मेरे बायें हाथ मे है। अतः संसार मे जितने भी कार्य सिद्ध होते है वह पुरूषार्थ से होते है। मनुष्य के जीवन मे अगले क्षण क्या होने वाला है वह नही जानता है। ज्योतिषियों द्वारा फलित आश्वासन भ्रामिक है यह केवल मनुष्य को गुमराह करने वाला है।

उदाहरण :– भारत में मुगल साम्राज्य की नीव डालने वाले लुटेरे बाबर की जीवन की एक घटना है। जब वह भारत पर आक्रमण करने आया तो भारत के प्रसिद्ध भविष्य बताने वाले ज्योतिषी ने बाबर से कहा कि अभी आप भारत पर आक्रमण न करे इससे आपको सफलता नहीं मिलेगी। बाबर ने पूछा आपको यह जानकारी कैसे मिली। ज्योतिषी ने कहा हमारे फलित ज्योतिष शास्त्र मे लिखा है। बाबर ने कुछ सोचकर कहा ज्योतिषी जी आप यह भी जानते होंगे कि आप और कितने वर्ष जिन्दे रहोगे, ज्योतिषी ने कहा अभी मै 37 वर्ष और जिन्दा रहूंगा, बाबर ने म्यान से तलवार निकाली
और एक ही झटके में ज्योतिषी का सिर धड से अलग कर दिया और कहा कि जिसको अपने अगले क्षण का पता नही ऐसे पाखण्डी पर क्या विश्वास किया जा सकता है और उस ऐतिहासिक युद्ध में बाबर की विजय हुई और ज्योतिषी की बात मिथ्या हुई।

उदाहरण 2: आप कल्पना करो कि मेरे सामने एक भोजन का थाल पडा है और उसमे दस कटोरियां है अलग–अलग व्यंजनों की है। पहले मै कौन सी कटोरी का पदार्थ खाऊंगा ज्योतिष तो क्या स्वंय ईश्वर भी नही बता सकते है पहले मै कौन सी चीज खाऊंगा क्योंकि कर्म करना मेरे स्वतन्त्रता के अधिकार मे है।

उदाहरण 3. एक ब्राहमण काशी मे दस वर्ष ज्योतिष विद्या पढके अपने गांव मे आया गांव का एक उजट जाट लाठी लिये अपने खेत मे जा रहा था, नमस्ते पश्चतात जाट ने पूछा आप कहां से आ रहे है, ब्रहामण बोला मै दस वर्ष काशी से ज्योतिष विद्या पढ के आ रहा हूँ। जाट ने पूछा महाराज ज्योतिष क्या होता है। ब्रहामण ने बताया हम अगले क्षण आने वाली बातों को पहले बता देते हैं जाट ने पूछा महाराज मै पूछूं तो आप बतायेंगे, क्यो नही अवश्य पूछिये। ब्रहामण बोला मै उच्च कोटि का भविष्य वक्ता बन गया हूँ। अब जाट मे कन्धे से लाठी उठाकर घुमाकर पूछा बता मै तेरे इस लाठी को कहां मारूंगा। यह सुनकर ब्रहामण नीचे ऊपर देखने लगा, यदि मैने कहा कि सिर पे मारेगा तो वह पैरो पर ठोकेगा यदि पैरो पर कहा तो यह सिर पर ठोकेगा। ब्रहामण सिर झुका कर नीचे देखने लगा। इसलिए फलित ज्योतिष पाखण्ड है।

नव ग्रहो को मानव पर लगाने का भ्रम

प्रश्न :– (सत्यार्थ प्रकाश): जब किसी ग्रहस्थ ज्येातिर्विदाभास के पास जाके कहते है कि महाराज इसको क्या है? तब वह कहते है इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढे है। जो तुम इनकी शान्ति, पाठ, पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाए, नही तो बहुत पीडित और मर जाये तो भी आश्चर्य नही है।

उत्तर :– कहिए ज्योतिर्वित ! जैसी यह पृथ्वी जड है, वैसे ही सूर्य आदि लोक है। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ नही कर सकते। क्या ये चेतन है जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होकर सुख दे सकें।

भोली–भाली जनता को ठगने के लिये ग्रहो के प्रकोप का डर उनके दिलो में बिठा रखा है। प्रत्येक ग्रह जड है और पृथ्वी से लाखो गुना बडे है फिर वह एक छोटे से मनुष्य पर कैसे चढ सकते है।

उदाहरण: दो नवयुवक एक बलिष्ट शरीर बालक और दूसरा मरियल सा कमजोर शरीर वाले ज्योतिष के पास जाकर पूछने लगे महाराज हम पर कौन से ग्रह चढे है जो हमारे कोई भी कार्य सिद्ध नही होते। ज्योतिष ने बलिष्ट शरीर वाले युवक से कहा तुम पर सूर्य ग्रह मेहरबान है तुम्हारा कुछ भी अनिष्ट नही होगा और दूसरे कमजोर शरीर वाले युवक से कहा कि तुम पर सूर्य ग्रह चढे है तुम्हारा यह अनिष्ट करेंगे, जल्दी पूजा पाठ दान करो हम सूर्य ग्रह को शान्त कर देंगे।

यह सब कोतुहल एक विद्वान युवक देख रहा था, उससे रहा नही गया वह चुप भी कैसे रह सकता था ऋषि दयानन्द का भक्त जो था। उसने ज्योतिषी से कहा मै अभी इन दोनो की परीक्षा ले सकता हूँ क्या। ज्योतिषी जी ने अहंकार मे कहा अवश्य–अवश्य हमारा कथन कभी गलत नही होता है। अस्तु जून का महीना था दोपहर का समय था, विद्वान युवक ने दोनो पीड़ित युवको सेकहा मै तुम्हारी परीक्षा लूंगा दोनो के कपडे उतरवाये और नंगे पैर दोनो को पक्के फर्श पर खडा कर दिया और आधा घन्टा खडे रहने को कहा। किन्तु यह क्या जो बलिष्ट शरीर वाला युवका था जिस पर सूर्य ग्रह मेहरबान था वह चक्कर खाकर गिर गया और कमजोर शरीर वाला किन्तु दृढ इच्छा वाला वह युवक जिस पर सूर्य ग्रह कुपित थे ज्यो का त्यो खडा रहा अब आर्य युवक ज्योतिषी से कहने लगा कहिए महाराज प्रत्यक्ष मे आपकी भविष्य वाणी असफल क्यो हुई है। वास्तव में सूर्य ग्रह जड है और ताप से अधिक कुछ नही दे सेता है। सूर्य की गरमी का प्रभाव दोनो पर बराबर पडा किन्तु सहन क्षमता मे दोनो अलग–अलग थे। इसलिए नव ग्रहो का ज्योतिष भ्रम है, धोखा है।

शनिग्रह

शनि ग्रह पृथ्वी से लाखो मील दूर है और कई लाख गुना बडा है–बताइए ज्योतिषी जी महाराज वह शनि ग्रह एक छोटे से आदमी पर कैसे लग सकता है, शनि गृह के लगने से तो सारी पृथ्वी ही दब जायेगी। वास्तव में ईश्वरीय व्यवस्था में प्रत्येक ग्रह जड है और अपनी–अपनी धुरी पर केन्द्रित है। इस सृष्टि क्रम की व्यवस्था को बनाए रखते है। यह मानव जगत का उपकार ही करते है किन्तु अपकार कभी नही करते है।

उदाहरण : आश्चर्य होता है शनिवार को कुछ लोगो का धन्धा खूब चलता है वह एक बाल्टी मे तेल लेकर जगह–जगह चौराहो पर घरो मे शनि के नाम से लोगो को ठगते रहते है और अन्धविश्वासी लोग उनकी बाल्टी को सिक्को से भर देते है। क्या शनिदेव मांगने वाले लोगो पर मेहरबान होते है। नही यह उनका धन हरण का मार्ग है। और अधिक आश्चर्य होता है अब शनि को देवता बनाकर उनकी मूर्ति भी बना दी गई है और मन्दिर भी बना दिया गया है। ईश्वर भारत वासियों को सुमति दें।

परिवारो के प्रत्येक शुभ कार्यों में शुभ दिन मुहुर्त निकालना भी भ्रम है।

वास्तव में पृथ्वी पर सब दिन बराबर होते है और एक जैसे होते है ऋतुओ के अनुसार व जलवायु के अनुसार अपना प्रभाव दिखाते है। वैसे प्रत्येक शुभ कार्य करने के लिये प्रत्येक दिन शुभ होता है किन्तु आप अपना शुभ कार्य तब करे जब ऋतु अनुकूल हो स्वास्थय अनुकूल हो परिवार सुख शान्ति मे हो वह दिन किसी भी समय शुभ कार्य के लिए शुभ होता है।

एक ज्वलन्त उदाहरण : श्री राम चन्द्र जी कोई साधारण पुरूष न थे वह मर्यादा पुरूषोत्तम थे और उनके कुल गुरू वशिष्ठ भी ऋषी ब्रंहमा के पुत्र थे, श्रीराम को गद्दी पर बैठाने का मुर्हत वशिष्ठ ऋषि ने निकाला था। इसी मुर्हत मे श्री राम को चौदह वर्ष के लिये वनवास जाना पडा था। पीछे श्री राम के पिता दशरथ को पुत्र वियोग मे मृत्यू हो गई। तीनो रानिया विधवा हो गयी, आगे चलकर सीता का हरण हुआ, वशिष्ठ की शुभ मुर्हत शुभ कार्य हेतु व्यर्थ गया। इस ऐतिहासिक उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि शुभ व अशुभ मुहुर्त ज्योतिष का चलन भी भ्रामिक है।

गणित ज्योतिष अन्त में :– वेदो की शिक्षा के आधार पर गणित ज्योतिष सत्य है, गणित ज्योतिष द्वारा हम सौ वर्ष पहले बता सकते है कि क्या होगा। जैसे कि तिथियों का हिसाब, दिनो का हिसाब ऋतुओं का परिवर्तन, सूर्य व चन्द्र ग्रहण,। चूकिं यह सारी चीजे चांद सूर्य और जमीन इन तीनो को नियमानुसार गति पर निर्भर है, जिसमे एक पल का भी अन्तर नही आता। अतः हम सौ साल पहले बतला सकते है कि अमुक तिथि, अमुक वार को अमुक ऋतु में और अमुक समय में सूर्य व चन्द्र ग्रहण होगा, तथा कारण को देखकर कार्य का अनुमान अर्थात कारण को देखकर होने वाले काम का अनुमान आदि।

आर्य समाज के चौथे नियम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते है कि:–

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

– गढ़ निवास मोहकमपुर,
देहरादून उत्तराखण्ड।
मो.–9411512019, 9557641800

संध्या क्यों करनी चाहिए?

– डॉ. गंगा प्रसाद उपाध्याय

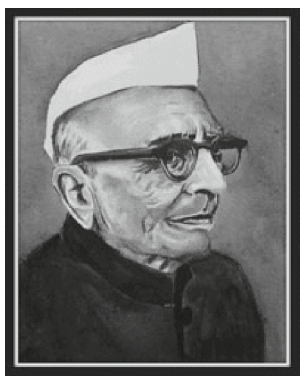

संध्या के विरुद्ध आक्षेप : संध्या करने की आवश्यकता के विषय में लोगों के मनों में अनेक शंकाएं उठती रहती हैं। जो ईश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते उनके लिए तो संध्या व्यर्थ ही है, परन्तु जो ईश्वर को सर्वनियन्ता मानते हैं वे भी सोचते हैं कि ईश्वर हमको हमारे कर्मों के अनुसार फल देता है, अतः उसका यशोगान करने से चाटुकारिता के सिवाय और क्या हो सकता है? कुछ लोगों का यह भी कहना है कि जो लोग संध्या करते हैं उनके लिए यह आवश्यक नहीं कि उनके आचरण संनध्या न करने वालों की अपेक्षा अच्छे ही हों। बहुत से संध्या करने वाले दम्भी, ठग, मिथ्याभिमानी और चरित्रहीन भी पाये गये हैं और बहुत से संन्ध्या न करने वाले सदाचारी, सत्यभाषी और भले भी पाये जाते हें। कुछ ऐसे भी हैं जो संनध्या इसी प्रयोजन से करते हैं कि ईश्वर उनको उनके बुरे कर्मों का दण्ड न दे। प्रायः यह प्रसिद्ध है कि परमात्मा अपने भक्तों की सहायता करता है और उनके बुरे कर्मों को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। भक्त कसाई, भक्त वेश्या, भक्त ठगों की कहानियां संसार के सभी मतों और देशों में पाई जाती है। बहुत से ईश्वर के नाम का इसीलिए जाप करते हैं कि उनको उनके पिछले पापों का दण्ड न मिले। इन सब बातों को देखकर विचारशील लोग कहते हैं कि यदि ये सब बातें ठीक हैं तो फिर संध्या करने से क्या लाभ? अपना आचरण ठीक करो जिससे भविष्य उज्ज्वल हो। संन्ध्या करने में व्यर्थ समय क्यों गंवाया जाये?

संध्या भी एक आचरण है :– संध्या के पक्षपाती कहते हैं कि आचरणों में तो संध्या भी एक आचरण है। जो संध्या नहीं करता वह अपने को पूरा सदाचारी नहीं कह सकता, क्योंकि पूरा सदाचारी बनने के लिए संध्यारूपी एक अंग को छोड़ना नहीं चाहिए। यह युक्ति सर्वथा बलहीन तो नहीं है, परन्तु ऐसी भी नहीं है जो संध्या के विरोधियों को संतुष्ट कर सके। क्योंकि इस युक्ति के अनुसार, संध्या करना, सदाचार के अनेक अंगों में से एक छोटा सा अंग रह जाता है जिसकी उपेक्षा की जा सकती है। लोग कह सकते हैं कि न सही पूरे सदाचारी, अधिकांश सदाचारी तो हैं ही, अतः इतने से काम चल जाता है। अधिक की आवश्यकता नहीं।

ईश्वर को संध्या से क्या मिलेगा? – संध्या करने वालों की ओर से कहा जाता है कि ईश्वर ने हमको सब कुछ दिया है। उसका धन्यवाद न करके हमको कृतघ्नता का पाप लगता है। यह बात तो ठीक ही है, परन्तु इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि कृतज्ञता का यह अर्थ नहीं कि इतनी लम्बी–चौड़ी संध्या की जाए। ईश्वर तो हमारे हृदयों को जानता है। हम मन में कह लेते हैं कि ''ईश्वर, तू धन्य है। तूने हम पर अपार दया की।'' इससे अधिक की आवश्यकता नहीं, क्योंकि हमारे धन्यवाद गान से ईश्वर को तो कुछ मिलेगा नहीं, न उसकी प्रसन्नता में कुछ अन्तर आयेगा। हमको कोई विशेष लाभ नहीं।

संध्या तोता रटन नहीं :– यह तो ठीक ही है कि नाममात्र रटने या कोरे जाप से कोई लाभ नहीं। योगदर्शन में जहां ईश्वर के जाप का विधान है वहाँ स्पष्ट है कि ''तज्ज्पस्तदर्थभावनम्'' अर्थात् ओ३म् के जप के साथ उसके अर्थों की भावना भी अवश्य करनी चाहिए। तोते के समान रटने से कोई लाभ नहीं।

मार्ग पर चल तो पड़े :– हम इस विषय में इतना कहेंगे कि कोरे जाप में भी किंचित लाभ तो अवश्य है, अर्थात् यद्यपि इस मार्ग का गामी उद्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुंच सकता, परन्तु वह उस मार्ग पर कुछ पग तो चल ही रहा है। न चलने वाले से कुछ चलने वाला अच्छा है। जो तोते के समान बे–समझे संध्या रटता है उसको सच्चा गुरु मिलने पर शीघ्र ही अर्थ समझने का लाभ प्राप्त हो सकेगा। उसके पास एक आरम्भिक वस्तु है, बीज है, उसे वृक्षरूप करके उसमें फल लाना है। यह लाभ है तो अत्यन्त स्वल्प, परन्तु जो कोई आरम्भ करेगा वह यहीं से आरम्भ करेगा। अर्थ तो शनैः–शनैः आगे को आवेंगे, अतः उस प्रथम कार्य की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमको यह नहीं कहना चाहिए कि संध्या रटने से कुछ लाभ नहीं। हमको पूरी सचाई से काम लेना चाहिए और कहना चाहिए कि जब तुमने एक काम आरम्भ किया तो उसे आगे भी बढ़ाओ जिससे यथेष्ट फल की प्राप्ति कर सको।

संध्या करने के लाभ :– यदि हम अपनी प्रवृत्तियों पर विचार करें तो उनकी दो गतियों का पता चलता है – अन्तर्मुखी प्रवृत्ति और बहिर्मुखी प्रवृत्ति। प्रायः हमारी बहिर्मुखी प्रवृति रहा करती है। हम क्या खाएं, क्या पियें, किससे मिलें, कैसे धन कमाएं आदि–आदि बाहर की बातों की ओर ही सोचा करते हैं। दिन–रात में बहुत कम ऐसा होता है कि बाहरी बातों से हमको छुटकारा हो सके और हमारी प्रवृत्तियाँ अन्तर्मुखी हो सके। कुछ लोग तो कभी भी नहीं सोचते। हां, जब हम सो जाते हैं और गहरी नींद आ जाती है तो हमारा कुछ देर के लिए बाहरी झंझटों से छुटकारा हो जाता है, परन्तु कभी–कभी हमको अपने विषय में भी सोचना चाहिए। जो सदा संसार के विषयों में ही लिप्त रहता है वह रथ के उस स्वामी के समान है जो रथ को सजाने में ही लगा रहता है और स्वयं भूखा या नंगा रहता है।

हम अपनी प्रवृत्तियों के दो भाग कर सकते हैं – एक तो केन्द्रोन्मुखी प्रवृत्तियां। यदि हमारी समस्त वृत्तियाँ केन्द्र की ओर ही रहें तो संसार का काम नहीं चल सकता। हम खाना, कपड़ा आदि प्राप्त करने के लिए बाहर की वस्तुओं से नाता जोड़ते हैं। परन्तु ऐसा नित्य करते–करते हम अपने केन्द्र से दूर होते जाते हैं। इसको रोकने के लिए दूसरी प्रवृत्ति केन्द्रोमुखी की आवश्यक होती है। याद रखना चाहिए कि

किसी चक्र या वृत्त को बनाने के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है – एक केन्द्र और दूसरा अर्द्धव्यास यदि केन्द्र हो और अर्द्धव्यास न हो तो वृत्त बन ही नहीं सकता और यदि केन्द्र न हो और अर्द्धव्यास हो तो भी वृत्त का बनाना असम्भव है। केन्द्र स्थान को नियत करता है और अर्द्धव्यास परिणाम को। यदि केन्द्र नियत है तो जितना बड़ा अर्द्धव्यास होगा उतना ही बड़ा चक्र बनेगा, और यदि केन्द्र नहीं है तो चाहे छोटा अर्द्धव्यास हो चाहे बड़ा, स्थानाभाव के कारण वृत्त नहीं बन सकता। इसका मोटा उदाहरण खूंटे से ले सकते हैं। बैल को खूंटे से बांध दो। बैल खूंटे के चारों के चारों ओर फिरेगा। परन्तु कितनी दूर तक? जितनी बड़ी रस्सी है। रस्सी चक्र से परिणाम को नियत करेगी, खूंटा स्थान को। यदि खूंटा न हो तो बैल रस्सी को लेकर भाग जायेगा। हमारी आत्मा केन्द्र है और हमारी भावनाएं अर्द्धव्यास हैं। केन्द्रोमुखी और केन्द्र प्रतिमुखी प्रवृत्तियों के समन्वय से ही लोक यात्रा चलती है। यदि इनके समन्वय में भेद पड़ जाये तो लोक यात्रा असम्भव है। यजुर्वेद में एक बहुत ही उपयोगी मन्त्र आया है।

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता स्थानाभाविवाराः। (यजुर्वेद 34/5) अर्थात् इस मन में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद इस प्रकार लगे हैं जैसे रथ के पहिये की नाभि में अरे लगे रहते हैं। पहिये में एक नाभि होती है और दूसरी परिधि। नाभि और परिधि में सम्बन्ध स्थापित करके उसे दृढ़ करने का काम अरों का है। अरे नाभि को अपने स्थान पर रखते और परिधि को अपनी मात्रा में बढ़ने नहीं देते। यह उपमा बड़ी सुन्दर है। धर्म, धर्म पुस्तक या ईश्वर भक्ति का सबसे मुख्य काम अरों का है जो केन्द्र को परिधि की ओर और परिधि को केन्द्र की ओर खींचे रखते हैं। इससे आत्मा संसार के कामों में संलग्न होता हुआ भी अपने को नहीं भूलता। जिस प्रकार अरों के न होने से परिधि टूट जाती है और समस्त चक्र अस्त–व्यस्त हो जाता है, उसी प्रकार धर्म का विचार न होने से मनुष्य संसार में इतना लिप्त हो जाता है कि उसकी संसार यात्रा भी सुखमय नहीं होती। संसार के सुख क्षणभंगुर होते हैं, उनमें उसी समय तक सुख है जब तक उनका सम्बन्ध हमारी आत्मा से है, जहां मर्यादा नष्ट हुई वहां सुख भी नष्ट हुआ और संसार भी बिगड़ गया।

संध्या मर्यादित करती है – संध्या करने का सबसे बड़ा फल यह है कि हम अपनी आत्मा और उसके भीतर व्यापक परमात्मा का चिन्तन करके अपने सांसारिक सम्बन्ध को मर्यादा में रखते हैं। दिन में दो बार सायं प्रातः यह सोचना कि हम आत्मा हैं, चेतन हैं, जड़ नहीं है, जड़ जगत् से हमारा सम्बन्ध उतना ही है जितना हमारे लिए उपयोगी है, यह कुछ कम नहीं है। हमारा मन उस कबूतर के समान है जिसके पैर में धागा बंधा हुआ है। यह धागा उसे अपनी छतरी से नियत दूरी तक ही उड़ने देता है। ज्यों ही वह सीमा पार हुई, धागा उसको छतरी की ओर खींच लेता है – ''बस इससे आगे मत बढ़ो बढ़ने में विपत्ति है।''

बिना खूंटे के बैल न बनिए :– बुद्धिहीन बैल समझता है कि गले की रस्सी उसके लिए व्यर्थ का बन्धन है। वह उसको खूंटे से बहुत दूर नहीं जाने देती। परन्तु उसको ज्ञात नहीं कि स्वामी ने यह रस्सी समझ–बूझकर बांधी है। रस्सी तोड़कर खूंटे से भागना भयानक जंगल में भेड़ियों और व्याघ्रों का शिकार होना है। सुख उसी समय तक है जब तक रस्सी से बंधे हुए मर्यादा के भीतर चल रहे हो। ईशोपनिषद् में कहा है –

तेन त्यक्तेन भुंजीथाः। (यजुर्वेद 40/1)

त्याग भाव से संसार को भोगो। संसार यात्रा के लिए संसार की वस्तुओं को भोगना तो है ही, परन्तु क्या भोगते ही चले जाओगे? कितना भोगेंगे? यदि यात्रा का उल्लंघन किया तो याद रखो कि संसार की वस्तुओं से सुख भाग जायेगा। संसार की हर एक वस्तु एक सीमा तक ही सुख देती है। उस सीमा को पार किया और दुःख आरम्भ हुआ। अंगूर को मुंह में रखो, मीठा लगेगा। उसको दो घण्टे मुंह में रखे रहो, मतली आने लगेगी। क्यों? इसलिए कि सीमा से बाहर चले गए। अंगूर मजेदार था। उसका मजा कौन चुरा ले गया? अंगूर तो तुम्हारे मुंह में है? उत्तर मिलेगा कि तुम्हारा सीमोल्लंघन ही मजे को उड़ाकर ले गया। अंगूर वही है। आपकी उच्छंखृलता मजे की बाधक है। परमात्मा चिन्तन हमको संसार में मर्यादा के बाहर विचरने से रोकता है। वह हमारी वृत्तियों को भीतर की ओर खींचता रहता है। यदि इस चिन्तन को सर्वथा त्याग दिया जाये तो हम बे–खूंटे के बैल हो जाते हैं। मन लगाकर और अर्थ समझकर संध्या करने वाले व्यक्ति को नित्य यह सोचने का अवसर मिलता है कि मैं क्या हूँ? परमात्मा क्या है? मेरा संसार से कितना सम्बन्ध है? मुझे संसार की वस्तुओं को भोगने की कहां तक आज्ञा है और मेरा इसमें अपना कितना हित है?

एक और बात है। यह तो सब जानते हैं, वे हमको अच्छी लगती है, परन्तु हमको यह ज्ञान नहीं कि वह मजा कितनी सीमा तक है। लोग इसलिए दुःख नहींउठाते कि वे वस्तुओं को भोगते हैं। वे इसलिए दुःख उठाते हैं कि वे सीमा से अधिक वस्तुओं को भोगते हैं। शरीर धारण के लिए भोजन की आवश्यकता है, परन्तु परिमित भोजन की।

आत्म तत्व पर भी ध्यान दो – इससे आगे क्या है? रोग और मृत्यु। वही दूध, दही, घी, वहीं मीठा जो शरीर को पुष्टि देते हैं, मात्रा से अधिक रोग के कारण हो जाते हैं। अतः इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हमको जड़ वस्तुओं की उपयोगिता की सीमा का परिज्ञान होता रहे और हम यह न भूल जायें कि हर एक खाने–पीने की वस्तु के मजे में हमारा चेतन भाग कितना है? ईश्वर का चिन्तन हमको नित्य यह याद दिलाता रहता है कि हर वस्तु के मजे में इतना भाग आत्मतत्व का है।

– गंगा ज्ञान सागर से साभार

पृष्ठ 1 का शेष

हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द उत्साह एवं जोश के वातावरण में हुआ सम्पन्न

सम्बन्ध में जितने अश्लील गाने, अश्लील विज्ञापन, अश्लील फब्तियाँ तथा अभद्र व्यवहार देखने को मिलता है, इतना पहले कभी नहीं था। अतः कन्या भ्रूण हत्या के साथ–साथ महिलाओं को जिस प्रकार से तिरस्कृत किया जा रहा है उसके विरुद्ध भी पूरे समाज को खड़ा होना चाहिए। श्री सहदेव बेधड़क ने शहीदे आजम भगत सिंह तथा श्री कुलदीप आर्य ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन से सम्बन्धित गीत तथा भजन प्रस्तुत करके श्रोताओं के रोंगटे खड़े कर दिये। सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजक स्वामी रामवेश जी ने घोषणा की कि वे पूरे देश की पंचायतों का आह्वान करेंगे कि शीघ्रातिशीघ्र अपने गांव में शराब का ठेका न खोलने का प्रस्ताव भेजें, ताकि सरकार पर पूर्ण शराबबन्दी के लिए दबाव बनाया जा सके।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में नशामुक्त भारत का नारा दिया और कहा कि जो राजनीतिक दल पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की घोषणा करेगा और नशामुक्त भारत के पवित्र उद्देश्य को पूरा करने में सहयोग करेगा, आगामी चुनाव में आर्य समाज उसी के अनुरूप अपनी नीति बनायेगा। उन्होंने कहा कि आज शराब के कारण पूरा भारत बर्बादी की ओर जा रहा है। युवा वर्ग नशे की चपेट में है और सरकार ने शराब से प्राप्त होने वाले टैक्स को अपनी आमदनी का मुख्य स्रोत बना लिया है। ऐसी स्थिति में देश को नशामुक्त बनाने के लिए और तीव्र गति से अभियान चलाया जाना चाहिए। स्वामी जी ने गत दिनों सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिये गये महत्वपूर्ण निर्णयों की चर्चा करते हुए कहा कि समलैंगिकता को अपराध से मुक्त करने तथा शादीशुदा महिलाओं को स्वतंत्रता देने सम्बन्धी निर्णयों से पूरे समाज में अत्यन्त आक्रोश एवं चिन्ता प्रतीत हो रही है। नैतिकता का यह तकाजा है कि सर्वोच्च न्यायालय अपने उक्त दोनों निर्णयों पर पुनर्विचार करके जनभावनाओं का सम्मान करे और विवाह जैसी पवित्र व्यवस्था को सुरक्षित करवाये। स्वामी आर्यवेश जी ने बेटी बचाओ अभियान के सम्बन्ध में बताया कि यह अभियान सर्वप्रथम सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रारम्भ किया गया था उसके पश्चात् ही अन्य सामाजिक संगठनों एवं राजनीतिक दलों ने अपने कार्यक्रमों के एजेण्डे में इसे शामिल किया है। किन्तु अभी भी इस सम्बन्ध में संतोषजनक प्रगति नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि इसके लिए लोगों को अपनी मानसिकता बदलनी होगी और बेटियों की हर क्षेत्र में उपलब्धियों को देखकर यह निर्णय लेना होगा कि जब बेटियाँ बेटों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं तो हम बेटा और बेटी में अन्तर क्यों करते हैं। इस तरह स्वयं आत्म चिन्तन करके लोग बेटियों को भी जन्म लेने तथा सब प्रकार से उन्नति करने का अवसर देंगे तो हमारा समाज उन्नति के शिखर तक पहुंचेगा। स्वामी जी ने धर्म के नाम पर भोली–भाली जनता को बहकाकर ठगने वाले कथित बाबाओं एवं गुरुओं की चर्चा करते हुए कहा कि अब ऐसे ढोंगी एवं पाखण्डियों का समय समाप्त होता जा रहा है। उनके काले कारनामें जनता को समझ में आ रहे हैं। उनमें से कुछ लोग जेल की सीखचों के भीतर बंद पड़े अपने कुकृत्यों पर पश्चाताप कर रहे हैं। ऐसे समय में आर्य समाज को धर्म का सच्चा स्वरूप, ईश्वर की सही उपासना एवं चरित्र निर्माण के सही उपाय जनता के सामने प्रस्तुत करने चाहिए। इस तरह के प्रस्ताव उपस्थित जनसमूह ने हाथ उठाकर पास किये। कार्यक्रम के अन्त में विशेष लोगों को स्मृति चिन्ह तथा शॉल देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित महानुभावों में मुख्य रूप से श्री जिले सिंह, श्री ओम प्रकाश जुलाना, श्री ओम प्रकाश बरसोला, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्री रामचन्द्र, श्री भोम सिंह, श्री जगदीश आर्य रहे। इस महासम्मेलन की व्यवस्था में सर्वश्री वीरेन्द्र लाठर जुलाना, प्रिं. जगफूल सिंह ढिल्लो, श्री दयानन्द आर्य अहीरका, श्री रणवीर राठी, मा. सत्यवीर आर्य जुलानी, श्री केवल आर्य जुलानी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

आर्य जगत के पुरोधा एवं आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक के संस्थापक

आचार्य वेदव्रत शास्त्री जी का देहावसान

गुरुकुल शिक्षा–दीक्षा के प्रकाण्ड पंडित आचार्य वेदव्रत शास्त्री जी का जीवन सफर पूर्ण हो गया। उन्होंने इस भूलोक की 8 दिसम्बर, 1932 से लेकर 4 दिसम्बर, 2018 तक की यात्रा पूरी की। राजस्थान इलाके के जयपुर रियासत के छोटे से गाँव घासी का बास में उनका जन्म हुआ था। जीवन यात्रा का अन्तिम लमहा दयानन्द मठ, रोहतक स्थित उनके आवास पर पूरा हुआ। उनके पिता का नाम श्री ज्ञानाराम व माता जी का श्रीमती जमना देवी था। उनकी प्राथमिक शिक्षा गांव ओजटू व बखतावरपुर के स्कूलों में हुई। पारिवारिक परिवेश के मुताबिक 1 जनवरी, 1946 को आपने गुरुकुल झज्जर में प्रवेश किया। गुरुकुल में प्रवेश पाकर आपने विशुद्ध आर्य पद्धति से शिक्षा, व्याकरण, कल्प निरुक्त, छन्द और ज्योतिष वेदांगों का गुरुमुख से अध्ययन किया। व्याकरण वेदांग में विशेष निपुणता प्राप्त की। आपने 1964 में सम्पूर्ण व्याकरण महाभाष्य का प्रदीप उद्द्योत संस्कृत टीका एवं विमर्श टिप्पणी सहित सम्पादन करके शुद्धतम् संस्करण गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित करवाया। आपने सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक और वेदांत दर्शन, ईशादि एकादश उपनिषद्, रामायण, महाभारत तथा संस्कृत साहित्य का गुरुमुख से अध्ययन कर परीक्षोत्तीर्ण करके तत्तद्विषय में आचार्य उपाधि प्राप्त की।

इसके अलावा आपने आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में नियमित अध्ययन करके आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की। आयुर्वेद/यूनानी बोर्ड हरियाणा पंचकूला से प्रथम श्रेणी में पंजीकृत आयुर्वेद चिकित्सक रहे।

1958 ई. में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की विशारद और शास्त्री परीक्षाओं में विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम रहकर पिछले अनेक वर्षों के रिकार्ड को तोड़कर यशभागी बने। गुरुकुल झज्जर में रहते हुए भी अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् अजमेर की सिद्धान्त रत्न, सिद्धान्त भास्कर, सिद्धान्त शास्त्री, सिद्धान्त वाचस्पति और साहित्य सरोज (सर्वप्रथम) परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी प्रकार स्वाध्याय मण्डल किल्लापारडी सूरत की संस्कृत विशारद, गीतालंकार, उपनिषदलंकार और वेदाचार्य परीक्षाएं भी उत्तीर्ण की है। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्याभास्कर परीक्षा, इतना ही नहीं आपने उपदेशक विद्यालय (लाहौर) यमुनानगर की सर्वोच्च परीक्षा, सिद्धान्तशिरोमणि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

आपने आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) जी के साथ सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य पद पर 1952 से 1964 ई. तक 12 वर्ष गुरुकुल झज्जर का संचालन और अध्यापन कार्य भी किया।

22 जून, 1964 ई. के दिन मा. जागेराम आर्य की पुत्री सुवीरादेवी के साथ आपका पाणिग्रहण संस्कार हुआ। विवाह में वरसहित 5 बराती गये थे। किसी प्रकार के दान, दहेज, दिखावे से रहित आदर्श पंचायती विवाह हुआ था। जीवन चलता रहा। 19 जून, 2005 ई. को जीवन संगिनी श्रीमती सुवीरादेवी का लोक से प्रस्थान हो गया।

दयानन्द मठ रोहतक में 7 जुलाई, 1966 को आचार्य प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। गुरुकुल झज्जर की विद्यार्यसभा के अनेक वर्षों तक मन्त्री, कोषाध्यक्ष और प्रधान पद पर कार्य किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल कांगड़ी की विद्यासभा और सीनेट के सदस्य रहे।

सन् 1953 से गुरुकुल झज्जर के मासिक पत्र 'सुधारक' से व्यवस्थापक, सम्पादक और मुद्रक के रूप में जुड़े रहे। सन् 1973 से वर्ष 2016 तक 'सर्वहितकारी' हिन्दी साप्ताहिक पत्र के सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाश रहे। आपने ''आसनों के व्यायाम'' और 'वेदविमर्श' नाम से पुस्तकें लिखीं। भर्तृहरिकृत नीतिशतक पर संस्कृत और आर्यभाषा से सुबोधिनी टीका लिखी।

शास्त्री जी की अन्तिम यात्रा में भाग लेते हुए स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य विजयपाल एवं स्वामी प्रणवानन्द जी

कविरत्न आचार्य मेधाव्रतकृत 'गुरुकुलशतकम्' और 'विरजानन्दचरितम्' पद्यकाव्यों के हिन्दी भाषा में अनुवाद करके छपवाये। आकाशवाणी रोहतक से भी अनेक बार सामयिक लेख प्रसारित हुए।

आर्य समाज के सर्वप्रथम दीर्घजीवी भजनोपदेशक पं. बस्तीराम शर्मा की सभी 13 भजन पुस्तकों (हिन्दी पद्यकाव्य) का 'पं. बस्तीराम सर्वस्व' नाम से सम्पादन कर प्रकाशित करवाया। इसके प्रारम्भ में पण्डित जी का संक्षिप्त जीवन परिचय भी लिखा गया है। इसी प्रकार आर्य भजनोपदेशक चौ. ईश्वर सिंह गहलोत ककरोला दिल्ली के सम्पूर्ण पद्यकाव्य का शुद्ध एवं सुन्दर रूप में सम्पादन करके उनके जीवन परिचय सहित छपवाया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अन्तर्गत सदस्य, उपमंत्री, उपप्रधान, कोषाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष, मंत्री और कार्यकारी प्रधान पदों पर निरन्तर सेवा की। आपने अंतिम घड़ी तक 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छनं समाः' इस वेद वचन के अनुसार अपना जीवन जिया। आपको कोटि–कोटि नमन।

– मनोज प्रभाकर

एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल एवं बचपन किड्स केयर इण्टर नेशनल स्कूल, दीनानगर, पंजाब का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हुआ सम्पन्न

प्रो. स्वतंत्र कुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी एवं श्री गोपाल शर्मा तहसीलदार, दीनानगर रहे मुख्य अतिथि

संस्था के प्रधान श्री अरविन्द मेहता ने किया सभी का स्वागत

एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल एवं बचपन किड्स केयर इण्टर नेशनल स्कूल, दीनानगर, जिला–गुरुदासपुर, पंजाब का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह 1 से 3 दिसम्बर, 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। 1 दिसम्बर को एस.एस.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल का समारोह आयोजित किया गया था जिसमें मुख्य अतिथि गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति प्रो. स्वतंत्र कुमार मुरगई एवं अध्यक्ष सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे। इसी प्रकार 2 व 3 दिसम्बर को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में किड्स केयर इण्टर नेशनल स्कूल का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री गोपाल शर्मा तहसीलदार, दीनानगर मुख्य रूप से पधारे। इनके अतिरिक्त प्रिंसिपल निर्मल पांधी विशेष अतिथि रहे। नवोदय विद्यालय होशियारपुर के प्रिंसिपल श्री हरजीत सिंह तथा ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। स्कूल मैनेजमेंट कमेटी के अध्यक्ष श्री अरविन्द मेहता मैनेजर श्री अवतार कृष्ण गुप्ता, सचिव श्रीमती मधुर भाषिणी एवं प्रिंसिपल रेनू कश्यप ने सभी अतिथियों का शॉल, मोमेंटम आदि देकर स्वागत किया। इसी प्रकार समारोह के प्रथम दिवस एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. कमलेश शर्मा ने विद्यालय की प्रगति रिपोर्ट पढ़कर सुनाई तथा सभी आगन्तुक महानुभावों का अभिनन्दन किया। दीप प्रज्ज्वलित करने के पश्चात्

छात्र–छात्राओं ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत करके सभागार में उपस्थित अभिभावकों एवं दर्शकों को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि श्री गोपाल शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि जिस प्रकार एक दीपक से बाहर का अंधेरा मिट जाता है उसी प्रकार विद्या प्राप्त करने से मन का अन्धकार दूर हो जाता है। प्रिंसिपल निर्मल पांधी ने बच्चों को भारतीय संस्कृति के अनुरूप ढालने के लिए शिक्षकों के साथ–साथ अभिभावकों को भी अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए प्रेरित किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने स्कूल को सी. बी.एस.सी. से मान्यता मिलने पर प्रसन्नता जताते हुए कहा कि इसका सारा श्रेय मैनेजमेंट के अध्यक्ष श्री अरविन्द मेहता, प्रिंसिपल रेनू कश्यप एवं प्रिंसिपल कमलेश शर्मा तथा स्टाफ के समस्त सदस्यों को जाता है। स्वामी जी ने गायत्री मंत्र के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को प्रेरणा दी कि वे प्रतिदिन गायत्री मंत्र का अर्थ सहित पाठ करने का अभ्यास करें। इससे उनके जीवन में विशेष उन्नति होगी। स्वामी जी ने जन्मभूमि को स्वर्ग से भी महान बताते हुए कहा कि हमें अपने देश के लिए सदैव त्याग एवं बलिदान की भावना अपने हृदयों में रखनी चाहिए।

इस अवसर पर ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बच्चों को अत्यन्त प्रेरणादाई उद्बोधन देकर मनोरंजन के साथ अत्यन्त प्रभावित किया। प्रिंसिपल जसकरण सिंह ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अनेक दृष्टान्त सुनाये और बच्चों को नैतिकता एवं ईमानदारी को अपनाने की प्रेरणा दी।

समारोह में बच्चों के द्वारा दी गई प्रस्तुतियों में सामाजिक विषयों पर अत्यन्त प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। जिनमें माँ–बाप के प्रति कम होती श्रद्धा, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, मोबाईल, टेलीफोन के अंधाधुंध इस्तेमाल के दुष्प्रभाव तथा पर्यावरण रक्षा आदि विशेष आकर्षण के विषय थे। कार्यक्रम में मार्केट कमेटी के सचिव श्री विनय चौधरी, डॉ. सर्वजीत पांधी, श्री शशिपाल गुप्ता, श्री यशपाल सिंह, डॉ. केवल कृष्ण, नगर कौंसिल के पूर्व प्रधान श्री सतीश महाजन, श्री सुवीर महाजन, श्री विजय शर्मा, ठा. राजसिंह, श्री विजय कामरा, श्री सुखदेव बिज, श्री तरसेम लाल आर्य, श्रीमती नीलम मंहत पूर्व चेयरमैन योजना बोर्ड, श्रीमती भूमिका मेहता, श्रीमती सुमेधा एवं श्रीमती सुमति खुल्लर भी मौजूद थे। कार्यक्रम के मंच संचालन का दायित्व लालिमा गोत्रा, दीप्ति नागपाल एवं नेहा शर्मा ने अत्यन्त कुशलता से निभाया।

इस अवसर पर अकादमिक वर्ष में अपनी कक्षा में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र एवं छात्राओं को मोंमेंटो देकर पुरस्कृत किया गया। वहीं आगन्तुक अतिथियों को भी शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर विशेष रूप से सम्मानित किया गया। स्कूल प्रबन्ध कमेटी के प्रधान श्री अरविन्द मेहता ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि दीनानगर क्षेत्र अत्यन्त पिछड़ा हुआ है। अतः उनका लक्ष्य इन संस्थाओं के माध्यम से इन बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में ऊँचाइयों तक पहुँचाना है। उन्होंने बताया कि शिक्षा के साथ–साथ स्कूल में शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए खेलकूद तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। तीनों दिन अभिभावकों एवं अतिथियों के लिए प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त रोचक, प्रभावशाली एवं सफल रहा, जिसकी मुक्त कण्ठ से सभी ने प्रशंसा की।

आर्य नेता पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी के 95वें जयन्ती समारोह के अवसर पर स्मृति व्याख्यान का भव्य आयोजन

आर्य समाज के प्रखर वक्ता एवं सांसद पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी का जयन्ती समारोह 30 दिसम्बर, 2018 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में मनाया जायेगा। इस अवसर पर एक स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है जिसका विषय है ''राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को चुनौतियाँ''। शास्त्री जी की राष्ट्र भक्ति की भावना से प्रेरित यह आयोजन किया जा रहा है।

इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. धीरज सिंह प्रधान, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी, डॉ. संजय त्यागी डीन मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, श्री अनिल त्यागी उपकुलपति इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, श्री आनन्द चौहान जी चेयरमैन एमेटी शिक्षण संस्थान, श्री के. सी. त्यागी पूर्व सांसद, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष

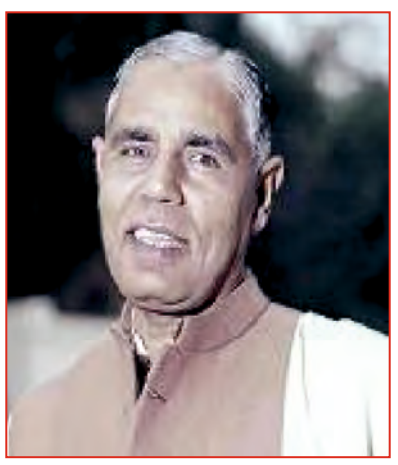

सार्वदेशिक सभा, श्री अनिल आर्य अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री प्रदीप त्यागी जी पूर्व इन्कम टैक्स कमिश्नर्स, संविधान विशेषज्ञ श्री सुभाष कश्यप जी एवं साहित्य अकादमी भाषा पुरस्कार विजेता श्री योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' जी सहित अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

कार्यक्रम दोपहर 2 से 4.30 बजे तक ऑडिटोरियम, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, 40 मैक्स मूलर मार्ग, निकट लोधी गार्डन, नई दिल्ली में आयोजित हो रहा है। इसमें पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। जिन आर्य महानुभावों के पास पं. प्रकाश वीर शास्त्री जी से सम्बन्धित संस्मरण एवं चित्र आदि हों वे pvshastrimemorialtrust@gmail.com इस ईमेल पर भेजने का कष्ट करें।

– शरद त्यागी, मो.:–9896187096

दो वेद मंत्र युवाओं के लिए

– अभिमन्यु कुमार खुल्लर

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।
ओ३म् भूर्भुव स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

प्रथम मंत्र महर्षि का सर्वाधिक प्रिय मंत्र है। वेद भाष्य में अनेक बार इस मंत्र का उल्लेख किया है। दूसरे मंत्र को चारों वेदों के बीस हजार से भी अधिक मंत्रों में प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसे गायत्री मंत्र, गुरुमंत्र और महामंत्र भी कहा जाता है।

यह लेख न तो विद्वानों को और न ही वृद्धजन को दृष्टिगत रखकर लिखा गया है। प्रथम मंत्र में आए 'दुरितानि' शब्द का अर्थ महर्षि दयानंद ने दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख बताया है। दुर्गुण और दुर्व्यसन के पराभव की प्रार्थना युवावस्था में ही की जानी चाहिए। वृद्धावस्था में इनके दूर करने की प्रार्थना कोई अर्थ नहीं रखती। दुख से मुक्ति की प्रार्थना किसी भी आयु में की जा सकती है। दूसरे मंत्र में बताया गया है कि कौन इन दुरितों को दूर करने की सामर्थ्य रखता है? वह कौन है और उसकी सामर्थ्य कैसी है?

प्रथम मंत्र का सरल भाषा में अर्थ है – हे देव! हे सविता! आप हमारे दुरितों – दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर कीजिए और जो भी अच्छे गुण, कर्म और स्वभाव हैं उन्हें प्राप्त कराइये।

दूसरे मंत्र का अर्थ है – हे प्राणस्वरूप, दुखहर्ता और व्यापक आनंद के देने वाले प्रभु! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं। हम आपके उस पूजनीय पाप विनाशक तेज (भर्ग) का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों को सदैव सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

महर्षि दयानंद गायत्री मंत्र का प्रतिदिन एक हजार बार अर्थ सहित जाप करने का उपदेश करते थे। आशय यही होगा कि यह मंत्र व्यक्ति के दिलों दिमाग पर छा जाए, स्थाई रूप से स्मृतिपटल पर अंकित हो जावे और जब भी मनुष्य दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुख में फंसे अथवा जीवन के झंझावातों में अध्ययन काल से लेकर कार्य क्षेत्र में उतरने पर भी यदि कोई संकट आवे तो परमात्मा उसकी रक्षा करें।

दोनों मंत्रों में ईश्वर की पहिचान बताई गई है। ओ३म् उसका निज नाम है। इस नाम में उसका स्वरूप और उसकी तीनों शक्तियों सृष्टि निर्माण, पालन और प्रलय का समावेश है। देव सब सुखों का देने वाला। सविता सब जगत का उत्पत्तिकर्ता और ऐश्वर्यों का दाता। भूः – सब चेतन जगत के जीवन का आधार अर्थात् प्राण। भुवः – सब दुखों से रहित व इनसे बचाने वाला है। स्वः – सब जगत को व्यापक होकर धारण करने वाला अर्थात् नियमों में बाँध रखने वाला। ऐसा ईश्वर ही 'वरेण्यं – वरण करने अर्थात् 'मानने' योग्य है और उसी से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें बुरे मार्ग से छुड़ाकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा (प्रचोदयात) दे।

उपरोक्त गुणों शक्तियों से सम्पृक्त ईश्वर ने 'आत्मा' को मानव शरीर दिया है। इस शरीर को छः तत्वों – काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद (नशा अहंकार) और मत्सर (ईर्ष्या द्वेष) से संजोया है। प्रत्येक मानव में इनका विभिन्न अनुपात उसके स्वतंत्र पृथक अस्तित्व को दर्शाता है। मानवीय क्रिया को गति देने वाली शक्ति Creative/moving force ये ही तत्व हैं। यह भी यथार्थ है कि समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुख के भी ये ही तत्व कारण हैं। इसीलिए शास्त्रकार इन्हें छः शत्रु मानते हैं, क्योंकि ये ही तत्व उसे श्रेय मार्ग से हटाकर, प्रेय मार्ग में ही उलझाये रखते हैं। श्रेय मार्ग आत्मा की मोक्ष प्राप्ति का मार्ग। प्रेय मार्ग सांसारिक क्रिया कलापों में विचरने का मार्ग।

ईश्वर काम कैसे करता है? बुद्धियों ब्रेन पॉवर मस्तिष्क की शक्तियों को बढ़ाकर, विवेक देकर सही गलत की पहिचान बताकर। इस विवेक को प्राप्त करके भी यदि मानव त्रुटि करता है, पाप करता है तो वह उसके मस्तिष्क में, गलत काम न करने के लिए भय डर पैदा करता है। काम करना चाहिए या नहीं करना चाहिए की शंका पैदा करता है। यदि इन दोनों चेतावनियों की भी वह अनसुनी करता है तो निषिद्ध कर्म करने के पश्चात् दुष्परिणाम स्वरूप प्राप्त लज्जा (शर्म) से भी अवगत कराता है।

कुछ प्रमुख दुगुर्णों, दुर्व्यसनों, दुःखों का संक्षिप्त विवरण विषय को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है :–

भ्रष्टाचार मानव जीवन का सर्वभक्षी दुर्गुण बन गया है। जीवन के सभी क्षेत्रों में यह घुन की तरह घुस गया है। मुख्यमंत्री, उच्चतम प्रशासनिक पद पर आसीन अधिकारी, सेनाधिकारी, न्यायाधीश बड़े–बड़े उद्यमी, धन्नासेठ व्यापारी इस दुर्गुण में लिप्त पाये जाने पर जेल की यातना, सामाजिक प्रतिष्ठा खोने पर लज्जित जीवन झेल चुके हैं या झेल रहे हैं।

अभी हाल ही में दो प्रकरण सामने आये हैं। डी. जी. पद पर पदस्थ वरिष्ठतम आई.ए.एस. अधिकारी बी.के. बंसल, नौ लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए, सी. बी.आई. द्वारा गिरफ्तार किये गये। आसन्न अपमान, मानसिक पीड़ा से बचने के लिए पहले पत्नी और पुत्री ने आत्महत्या की। कड़ी पूछताछ के कारण, बचने की आशा न देख पिता और पुत्र ने भी आत्महत्या कर ली। दिल्ल्ली की एक महिला सीनियर जज चार लाख की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ी गई।

दुर्व्यसनों में सिरमौर हैं – शराब, मादक पदार्थ चरस, हशीश और ड्रग्स का सेवन। उन्मुक्त कामवासना की अनाधिकृत तृप्ति व्यभिचार है। वेश्यागमन पहले से ही अस्तित्व में है और अब रात–रात भर चलने वाली रेव पार्टियों, डांस–बारों में यही सब कुछ तो होता है। शराब और शवाब के भीषण दुष्परिणाम से बचाने के लिए परमात्मा की चेतावनियाँ भय, शंका और लज्जा ही काम कर सकती है। स्थाई समाधान दे सकती है। मानवीय दण्ड विधान विवेक जागृत नहीं करता और नहीं हृदय परिवर्तन करता है। फिर भी देखा यह जाता है कि इन व्यसनों में ग्रस्त अधिकांश लोग, मानवीय कमजोरियों के चलते, घुटने टेक देते हैं।

दुःख के कारण और प्रकार की सूची अंतहीन है और इनसे प्राप्त पीड़ा भी अकल्पनीय और सीमातीत है। इनमें एक प्रमुख कारण पूर्व जन्मों के संचित कुकर्म हैं।

लेख की सीमा और उद्देश्य का ध्यान रखने के कारण यदि प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त दुःखों एवं व्यक्तिगत शारीरिक और मानसिक रोगजनित पीड़ा का विचार करना छोड़ दें तो क्रियात्मक रूप में दुःख देने वाले और दुःख झेलने वाले दोनों ही मनुष्य हैं। पूर्व वर्णित छः में से एक अथवा अधिक शत्रुओं से ग्रसित मनुष्य ही दुःख का कारण बनता है।

दुःखों का निवारण और कामनाओं की पूर्ति ईश्वर करता है पर कब? महर्षि दयानन्द के अनुसार जब पूर्ण पुरुषार्थ पूरी मेहनत और लगन के साथ प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिले तब दुःख, कष्ट, संकट निवारण का ईश्वरीय तरीका भी अद्भुत होता है। किसी भी रूप में अप्रत्याशित सहायता देकर, विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाकर धैर्य से उनका सामना करने का आत्मिक बल देकर।

आज का युवा वर्ग बेरोजगारी के कारण अत्यधिक पीड़ादायक मानसिक यंत्रणा झेल रहा है। उसकी जिन्दगी भटकाव की त्रासदी बन गई है। यह भटकाव बड़ी आसानी से उसे शराब, ड्रग्स सेवन एवं अपराध आदि के दुर्व्यसनों में ढकेल रहा है। ऐसी स्थिति में परिवार के अतिरिक्त उसे सच्चा मार्गदर्शक, विश्वसनीय हितैषी मित्र चाहिए जो 24 घण्टे उपलब्ध हो। इन मानदण्डों पर 100 प्रतिशत खरा उतरने वाला परमात्मा ही हो सकता है, अन्य कोई नहीं।

इसीलिए इस लेख में निराकार, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अत्यन्त संक्षिप्त परिचय और उसकी अपार क्षमताओं से युवावर्ग का परिचय कराने का प्रयास किया है, जिससे वे उसे ही सर्वोच्च हितैषी मित्र मानकर पूर्ण आस्थावान और विश्वासी बने। मुझे बड़ी हार्दिक प्रसन्नता है कि डी.ए.वी. संस्थाएं एवं गुरुकुल इसी विचारधारा के युवावर्ग का निर्माण कर रहे हैं।

– सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी, मध्य प्रदेश
22 नगर निगम क्वार्टस, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर–474001, मध्य प्रदेश

वैदिक नित्य कर्म विधि

– लेखक आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य एम.ए.

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मंत्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा–गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त सभी आर्यों के पर्वों के मन्त्र आर्य पर्व पद्धति भी सम्मिलित है। **विशेष बात यह है कि सब मन्त्र मोटे और लाल, सभी मन्त्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है।** 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण मूल्य एक प्रति 175 रुपये डाक व्यय अलग होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

मानव जीवन– मोक्ष की पाठशाला

– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

जिस प्रकार किसी पाठशाला में दाखिला लेकर एक विद्यार्थी अपने निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ता हुआ इस उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण करता है कि वह उस कक्षा में उत्तीर्ण होकर अंततः उस विद्यालय की अंतिम डिग्री को प्राप्त कर ले ताकि उसके उपरांत वह आगामी शिक्षा के लिए आगे किसी महाविद्यालय में दाखिला ले सके। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के रूप में जन्म लेकर एक बालक मोक्ष की पाठशाला में दाखिला लेता है।

जैसे विद्यालय में दाखिला लेने से पूर्व कुछ मूलभूत तैयारी अर्थात बस्ता किताबें साधन होने चाहिये ठीक उसी प्रकार मनुष्य के रूप में जन्म लेकर इस दुनियां की मोक्ष की पाठशाला में दाखिला केवल परमपिता परमेश्वर न्यायकर्ता द्वारा हमारे पूर्व जन्मों के फलों के आधार पर एक अनमोल तन अनुपम साधन मनुष्य शरीर के रूप में दिया जाता है। बिना जन्म के मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए जन्म पुनः जन्म एक लम्बी कड़ी के रूप में लेने पड़ते हैं। जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक–एक वर्ष में एक–एक कक्षा में प्रवेश लेकर स्वाध्याय करते हुए परीक्षा देकर परीक्षक द्वारा परीक्षा फल मिलने के उपरांत ही सीढ़ी दर सीढ़ी उत्तीर्ण होते हुए उच्च डिग्री हासिल होती है। ठीक उसी प्रकार इस विशाल मुक्ति विद्यालय का एक–एक जन्म कक्षाओं के रूप में मिलता है। यह जीवात्मा देही या रथी ईश्वर प्रदत्त सर्वोत्तम साधन मानव शरीर का उपयोग वा उपभोग अपने लक्ष्य की प्राप्ति अर्थात मुमुक्षत्व के लिए करना चाहती है। अब प्रश्न उठता है कि हमें अगली कक्षा में पूर्व कक्षाओं का पढ़ा हुआ आधार मिलता है। ठीक उसी प्रकार ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत कर्मफल सिद्धांत में बाकी सभी एकत्रित किए हुए भौतिक सुख सुविधाओं के साधन पीछे छूट जाते हैं। लेकिन हमारे किए हुए कर्म संस्कार रूप में ठीक उसी प्रकार साथ जाते हैं जैसे पिछली कक्षाओं में पढ़ा हुआ ज्ञान। और फिर जैसे हम अपनी वांछित डिग्री को प्राप्त करते है वैसे ही मानव जीवन के उद्देश्य अर्थात मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं। जीव, देही, रथी की नित्यता गीता के प्रसिद्ध श्लोक **नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि, नैनं दहति पावकः** से स्पष्ट है अर्थात यह जीवात्मा अजर अमर अविनाशी है जो ना मरता है, ना गलता है, ना जलता है। परन्तु गीता में योगेश्वर कृष्ण ने स्पष्ट कर दिया **'वासांसि जीर्णानी यथा विहाय''** यानि जीव चोला बदलता रहता है। जीर्ण शीर्ण होने पर जीव मानव चोले को बदल सकता है। यह साधन मनुष्य का शरीर जो अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी इन पांच तत्वों के संयोग से बना पुनः विभक्त होकर इन्हीं पांचों तत्वों में विलीन हो जाता है। साधन अर्थात जीवात्मा का साधन अर्थात जन्म और वियोग का नाम ही तो मृत्यु है। साधक अर्थात जीवात्मा का अजर अमर अविनाशी नित्य होना और साधन अर्थात शरीर का मरणधर्मा अनित्य होना ही इसका मोक्ष की इस महान पाठशाला में अगली कक्षा में प्रवेश को दिखलाता है।

अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य अपने जीवन काल में किस प्रकार के कर्म करे कि वह अपने जीवन के लक्ष्य, उद्देश्य अर्थात मोक्ष को प्राप्त करके अपने आत्मा को उस सत्य चेतन आनन्दस्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न करके जन्म जाल के बंधन से लम्बी अवधि के लिए मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर सके। इसके लिए भी योगेश्वर कष्ण ने **'यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्''** अर्थात यज्ञ दान तप आदि कर्म मनुष्य को पवित्र करने वाले हैं इनको त्यागना नहीं चाहिए।इनके द्वारा ही अभ्यास करते करते मनुष्य में मोक्ष प्राप्ति की भावना उत्पन्न हो जाती है। वैसे भी गीता में योगेश्वर कष्ण ने निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्म की संज्ञा दी है। इस प्रकार मनुष्य जीवन में सांख्य या ज्ञान योग से सत्य ज्ञान प्राप्त कर और उस सत्य ज्ञान को जीवन में धारण करके उसी के अनुरूप कर्म करता हुआ कर्म योगी बनकर ईश्वर की प्रत्येक आज्ञा अर्थात अन्तर्यामी ईश्वर के हर संदेश को सुनकर उसका यथावत पालन करता हुआ ईश्वर की भक्ति करके जीवन के उद्देश्य अर्थात मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

– 602 जी एच 53, सैक्टर 20 पंचकूला
मो. 09467608686 09878748899

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ओ३म्॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

वायु प्रदुषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु

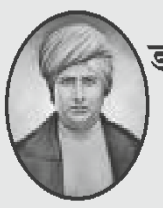

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में
स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 1, 2, 3 फरवरी 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली-110026 (मेट्रो स्टेशन, पंजाबी बाग)

राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा : शनिवार, 2 फरवरी 2019, प्रात: 10.30 बजे से

रूट: पंजाबी बाग स्टेडियम से शुभारम्भ वाया वेस्ट एवेन्यू, सेन्ट्रल मार्किट, आर्य समाज, गुरु नानक स्कूल, लाल बत्ती से बाएं, नॉर्थ एवेन्यू, क्लब रोड, मादीपुर चौक से दाएं, मादीपुर गांव, अरिहन्त नगर, वेस्ट एवेन्यू होकर वापिस स्टेडियम पर समापन।

संयोजक–लॉयन प्रमोद सपरा, वीरेश बुग्गा, डॉ. दीपक सचदेवा, डॉ. विपिन खेड़ा, विश्वनाथ आर्य, सन्तोष शास्त्री, वीरेश आर्य, राकेश भटनागर, योगेन्द्र शास्त्री, प्रवीण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, डॉ. विशाल आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र, के.एल. राणा, ओमवीर सिंह, दिनेश आर्य, के.के. यादव, ईश आर्य, देवदत्त आर्य, विक्रांत चौधरी, विपिन मित्तल, जीवनलाल आर्य, सीमा-रोहित धींगड़ा, के.के सेठी, माधव सिंह, अशोक सरदाना, डिम्पल-नीरज भंडारी, नरेश विग, सुनील अग्निहोत्री, कस्तूरीलाल मक्कड़, सुरेन्द्र कोछड़, वेदप्रकाश आर्य, डॉ. मुकेश सुधीर

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, राजीव कुमार परम, अरुण बंसल, सुरेन्द्र मानकटाला, महेन्द्र मनचन्दा

शुक्रवार 1 फरवरी, 2019		शनिवार 2 फरवरी, 2019		रविवार 3 फरवरी, 2019	
101 कुण्डीय विराट यज्ञ	:प्रात: 8.30 से 10.30	यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 9.30	151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	:प्रात: 10.45 बजे	ध्वजारोहण	: प्रात: 10.00 बजे	ध्वजारोहण	: प्रात: 11.00 बजे
आर्य महिला सम्मेलन	:11.00 से 2.00 बजे	राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा	: प्रात: 10.30 से 1.30	राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 2.30
आर्य युवा सम्मेलन	:2.15 से 5.00 बजे	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.30	शिक्षा संस्कृति बचाओ सम्मेलन	: 2.30 से 4.30
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	:5.00 से 6.00 बजे	सामुहिक सन्ध्या	: सायं 5.30 से 6.00	कार्यकर्ता सम्मान समारोह	: सायं 4.30 से 5.00 बजे
भव्य संगीत संध्या	:रात्रि 7.00 से 9.00 बजे	वेद संस्कृत रक्षा सम्मेलन	: रात्रि 7.00 से 9.00	धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	: सायं 5.30 बजे

दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या व समय के बारे में व यज्ञमान बनने के इच्छुक 15 जनवरी 2019 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास का उचित प्रबंध किया जा सके। सम्पर्क : देवेन्द्र भगत-9958889970, दुर्गेश आर्य-9868664800, राजीव आर्य-9968079062 सुनील सहगल-9968074213, सौरभ गुप्ता-9971467978, अरुण आर्य-9818530543, वरुण आर्य-8586801154, विनोद कालरा-9899444347

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	आनन्द चौहान	डॉ. रिखबचन्द जैन	सुभाष आर्य	सुरेन्द्र कोहली
राष्ट्रीय अध्यक्ष	रामकुमार सिंह	ठाकुर विक्रम सिंह	डॉ. लाजपत राय आर्य	कैलाश सांकला	नरेन्द्र आर्य सुमन
महेन्द्र भाई	सुभाष बब्बर	मायाप्रकाश त्यागी	योगराज अरोड़ा	रवि चड्ढा	गायत्री मीना
राष्ट्रीय महामंत्री	स्वतन्त्र कुकरेजा	चन्द्रमोहन खन्ना	रमेश कुमारी भारद्वाज	राजेन्द्र लाम्बा	बलवेव जिन्दल
सुरेश आर्य	आनन्द प्रकाश आर्य	प्रदीप तायल	धर्मपाल कुकरेजा	बलदेव सचदेवा	डॉ. गजराज सिंह आर्य
सुशील आर्य	राम कृष्ण शास्त्री	प्रवीन तायल	प्रेम कुमार सचदेवा	सत्यानन्द आर्य	ब्रह्मप्रकाश मान
राष्ट्रीय मंत्री	कृष्ण प्रसाद कौटिल्य	अमित मान	प्रिं. अंजु महरोत्रा	आर.पी. सूरी	रविदेव गुप्ता
धर्मपाल आर्य	भानुप्रताप वेदालंकार	विकास गोगिया	सत्यवीर चौधरी	सुभाष मित्तल	ए.के. धवन
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	स्वागतमंत्री		

स्वागत समिति: आ. प्रेमपाल शास्त्री, ओम सपरा, धर्मपाल परमार, अंजु जावा, नरेन्द्र कस्तूरिया, देवमित्र आर्य, उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्पकरणा, जितेन्द्र डावर, गवेन्द्र शास्त्री, प्रवीण भाटिया, राजरानी अग्रवाल, विवेक-हीरालाल चावला, डॉ. विनोद क्षेत्रपाल, अमरनाथ बत्रा, भोपाल सिंह आर्य, अरविन्द आर्य, विजय भास्कर, विजयारानी शर्मा, अमीरचन्द रखेजा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, राजेन्द्र दुर्गा, राजेन्द्र निझावन, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, चतरसिंह नागर, सुरेन्द्र शास्त्री, रामलुभाया महाजन, आदर्श आहूजा, प्रदीप गोगिया, सुशील बाली, डॉ. धर्मवीर आर्य, ओमप्रकाश गुप्ता, रणसिंह राणा, अशोक आर्य, बृजेश-पीतम गुप्ता, रमेश गाडी, सरोज-जवाहर भाटिया, मनोहरलाल चावला, हरिचन्द स्नेही

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9213402628, 9871581398, 9013137070

E-mail: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com

Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् द्वारा आयोजित

वैदिक–गुरुकुलीय–शास्त्रीय–प्रतिस्पर्धा सोल्लास सम्पन्न

नई दिल्ली: श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् द्वारा आयोजित तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा प्रायोजित प्रथम **'वैदिक-गुरुकुलीय- शास्त्रीय-प्रतिस्पर्धा'** 8-9 दिसम्बर, 2018 को गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली-49 के देवकीनन्दन सभागार में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई।

अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से अष्टाध्यायीकण्ठपाठ एवं लेखन, धातुपाठकण्ठपाठ एवं लेखन, त्रिभाषीकोषकण्ठपाठ, वैदिकसिद्धान्त प्रश्नमंच एवं शास्त्रार्थ-विमर्श (वाद-विवाद) सहित पाँच प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया गया। वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा के इस प्रथम संस्करण में 25 गुरुकुलों के 119 छात्र-छात्राओं ने पूर्ण पुरुषार्थ के साथ प्रतिभाग किया। इन प्रतिस्पर्धाओं का संचालन वैदिक गुरुकुल परिषद् के सह-मन्त्री आचार्य डॉ. धनंजय ने किया।

सर्वप्रथम अष्टाध्यायीकण्ठपाठ की प्रतिस्पर्धा आयोजित की गयी, जिसमें 25 प्रतिस्पर्धियों ने प्रतिभाग लिया। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने सम्पूर्ण अष्टाध्यायी को सुनाने के साथ-साथ लिखित परीक्षा भी दी। अग्रिम 10 प्रतिभागियों **'पाणिनीय'** उपाधि से सम्मानित करते हुए पाँच-पाँच हजार की राशि प्रदान की गयी। 89 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त अग्रिम 10 विजयी प्रतिभागी - **प्रज्ञा** (कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही), **भानुप्रताप** (गुरुकुल पौन्धा, देहरादून), **अर्जुन** (कान्हा आर्ष गुरुकुल नागपुर), **ऋचा** (कन्या गुरुकुल रुद्रपुर), **ऋतम्भरा** (कन्या गुरुकुल पंचगाँव), **अंशिका** (गुरुकुल रुद्रपुर), **अनिकेत आर्य** (गुरुकुल केरल), **सत्यप्रकाश** (आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय माउण्ट आबू), **राकेश** (गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा), **शुभम्** (गुरुकुल गौतमनगर) रहे। इस प्रतिस्पर्धा के निर्णायक **डॉ. श्रीवत्स** (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली), डॉ. उमा (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) एवं **डॉ. वेदव्रत** (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) रहे।

द्वितीय प्रतिस्पर्धा धातुपाठकण्ठपाठ की आयोजित की गई, जिसमें 18 प्रतिस्पर्धियों ने प्रतिभाग करते हुए सम्पूर्ण धातुपाठ को सुनाकर लिखित परीक्षा देकर अग्रिम 10 प्रतिभागियों को **'शाब्दिक'** की उपाधि तथा चार-चार हजार की राशि से सम्मानित किया गया। 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त अग्रिम 10 विजेता प्रतिस्पर्धी इस प्रकार हैं- **सूरज आर्य** (कान्हा आर्ष गुरुकुल नागपुर), **सुनीति** (गुरुकुल रुद्रपुर), **देवेन्द्र** (गुरुकुल पौन्धा), **अजय मलिक** (श्रीवत्स गोरक्षा आश्रम, गंजाम, उड़ीसा), **दिलीप दास** (गुरुकुल गौतमनगर), **प्रवेश** (कन्या गुरुकुल पंचगाँव), **राजश्री** (विश्ववारा गुरुकुल रुड़की, रोहतक), **शिवानी साहा** (माता परमेश्वरी देवी गुरुकुल, सुनावेडा, उड़ीसा) **वेदवती** (गुरुकुल शिवगंज), **विश्वरंजन महला** (गुरुकुल हरिपुर, उड़ीसा)। इस प्रतिस्पर्धा के निर्णायक **डॉ. बृजेश गौतम** (अध्यक्ष, संस्कृत-शिक्षक-संघ, दिल्ली), **डॉ. रवीन्द्र कुमार** (भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार) एवं **डॉ. सुभाष** (राजकीय महाविद्यालय तिजारा, अलवर, राजस्थान) रहे।

तृतीय प्रतिस्पर्धा त्रिभाषी शब्दकोष की आयोजित की गई, जिसमें 14 प्रतिस्पर्धियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतिस्पर्धा में आचार्य ओंकार जी द्वारा लिखित 'त्रिभाषी-कोष' नामक पुस्तक के संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी के लगभग 1500 से अधिक शब्दों को प्रतिस्पर्धियों द्वारा सुनाया गया। इस प्रतिस्पर्धा में **शीतल** (विश्ववारा गुरुकुल, रुड़की, रोहतक) ने **प्रथम**, **भारत कुमार** (गुरुकुल पौन्धा, देहरादून) ने **द्वितीय,** तथा **मनीषा** (विश्ववारा गुरुकुल, रुड़की, रोहतक) ने **तृतीय स्थान** प्राप्त किया। इसके साथ ही दो सान्त्वना पुरस्कार **पूजा** (कन्या गुरुकुल पंचगाँव) तथा **हरिकेश आर्य** (आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय माउण्ट आबू) ने प्राप्त किये। प्रथम पुरस्कार प्राप्तकर्ता का पाँच हजार, द्वितीय को दो हजार एवं तृतीय को एक हजार की राशि तथा सान्त्वना पुरस्कार में 500-500 रुपये की नगद राशि से सम्मानित किया गया। इस प्रतिस्पर्धा के निर्णायक **डॉ. अजीत कुमार** (दिल्ली विश्वविद्याल, दिल्ली), **डॉ. उमा आर्या** (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली), **डॉ. नागेन्द्र मिश्र** (गुरुकुल अयोध्या) रहे।

चतुर्थ प्रतिस्पर्धा वैदिक सिद्धान्त प्रश्न मंच की आयोजित की गई, जिसमें 40 प्रतिस्पर्धियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतिस्पर्धा में कक्षा आठवीं तक के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतिस्पर्धा में बाल-शिक्षा, व्यवहारभानु, पंचमहायज्ञविधि, वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी, स्वामी दयानन्द जीवन परिचय से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछा गया। जिसमें **संध्या** (विश्ववारा कन्या गुरुकुल, रुड़की, रोहतक) ने **प्रथम**, **संध्या** (कन्या गुरुकुल पंचगाँव) ने **द्वितीय** तथा **धर्मवीर आर्य** (गुरुकुल पौन्धा, देहरादून) ने **तृतीय** स्थान प्राप्त किया। साथ ही पाँच सान्त्वना पुरस्कार **मनीष आर्य** (नरसिंहनाथ गुरुकुल, बरगढ़, उड़ीसा), **महावीर आर्य** (गुरुकुल गोमत, अलीगढ़), **रितेश आर्य** (गुरुकुल पौन्धा, देहरादून), **सक्षम आर्य** (गुरुकुल गोमत, अलीगढ़), **योगेश आर्य** (नरसिंहनाथ गुरुकुल, बरगढ़, उड़ीसा) को प्रदान किये गये। प्रथम पुरस्कार में तीन हजार, द्वितीय पुरस्कार में दो हजार, तृतीय पुरस्कार में एक हजार तथा सान्त्वना पुरस्कार में 500-500 रुपये प्रदान किये गये। इस प्रतिस्पर्धा के निर्णायक **डॉ. अजीत कुमार** (दिल्ली विश्वविद्याल, दिल्ली), **स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती** (गुरुकुल पूठ), **डॉ. नागेन्द्र मिश्र** (गुरुकुल अयोध्या) रहे।

पंचम प्रतिस्पर्धा शास्त्रार्थविचार (वाद-विवाद) की आयोजित की गई, जिसमें 22 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतिस्पर्धा का विषय **जीवनोपयोगी संस्कृत भाषा** था। इस प्रतिस्पर्धा में संस्थागत रूप में **गुरुकुल पौन्धा, देहरादून** के **कैलाश** एव **सारांश** ने **प्रथम** स्थान तथा **कन्या गुरुकुल शिवगंज सिरोही** की **कृष्णा** एवं **मनीषा** ने **द्वितीय** स्थान एवं **तृतीय** स्थान **कन्या गुरुकुल नजीबाबाद** की **अंशु** एवं **सोनी** ने प्राप्त किया। व्यक्तिगत पुरस्कार के रूप में **शुभम्** (गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली) ने **प्रथम**, **दिनेश** (गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली) ने **द्वितीय** तथा **महीपाल** (आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय माउण्ट आबू) ने **तृतीय** स्थान एवं **विनायक** (श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली) ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इस प्रतिस्पर्धा के निर्णायक प्रो. **महावीर अग्रवाल** (प्रतिकुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार), **डॉ. श्रीवत्स** (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली), **डॉ. सुभाष** (राजकीय महाविद्यालय तिजारा, अलवर, राजस्थान) रहे।

इस प्रतिस्पर्धा के पुरस्कार समारोह में सभी निर्णायकों तथा गुरुकुलों से आये मार्गदर्शकों को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया। विजेता प्रतिस्पर्धियों को मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा पुरस्कार राशि प्रदान की गई। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं आचार्य प्रणवानन्द विश्वनीड-न्यास, पौन्धा देहरादून द्वारा एक-एक बैग तथा पुस्तकें देकर पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आशीर्वाद दिया। श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् द्वारा सभी प्रतिभागियों के लिए मार्गव्यय की व्यवस्था की गई। इस समारोह में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, प्रो. महावीर अग्रवाल जी, पं. सत्यपाल पथिक जी, पं. धर्मपाल शास्त्री जी, डॉ. श्रीवत्स जी, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी, श्री रामपाल शास्त्री जी, श्री चन्द्रदेव शास्त्री जी, आचार्य मनुदेव जी आदि ने आशीर्वाद प्रदान किया। प्रतिस्पर्धा के संचालक आचार्य डॉ. धनंजय जी ने उपस्थित प्रतिभागियों व सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

– **शिवदेव आर्य**
कार्यालयाध्यक्ष, वैदिक गुरुकुल परिषद्
मो.-8810005096

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।